# संस्कृत में संस्कृति का समावेशन

**अनुरंजना देवी**
कम्पोजिट विद्यालय कोठिलहाई,
मानिकपुर, चित्रकूट

**उद्देश्य–** संस्कृत भाषा हिन्दी भाषा की जननी है और इसे देवभाषा के रूप में भी जाना जाता है। वर्तमान समय में हमारी दैनिक बोलचाल की भाषा में संस्कृत का प्रयोग न होने से बच्चों को कठिनाई होती है। अक्सर बच्चों को संस्कृत भाषा पढ़ने और समझने में रूचि नहीं होती है। इस नवाचार का उद्देश्य संस्कृत भाषा को रूचिकर और आसान बनाना है। बच्चों को संस्कृत से हिन्दी अनुवाद करने में आने वाली कठिनाई को दूर करना है। इस नवाचर का उद्देश्य संस्कृत व्याकरण संबंधी विषय–वस्तु के अधिगम को आसान बनाने के साथ–साथ भारतीय संस्कृति का ज्ञान कराना और कठपुतली कला को बच्चों तक पहुँचाना है।

**क्रियान्वयन–** शिक्षिका द्वारा कठपुतली के माध्यम से गीत गाया जाता है। यहाँ प्रस्तुत गीत 'संस्कृत' व्याकरण के 'पुरूष' से सम्बन्धित है–

## पुरूष के प्रकार

**क्रियान्वयनः–** शिक्षिका द्वारा कठपुतली के माध्यम से एक गीत गाया जायेगा जो 'संस्कृत व्याकरण' के पुरूष से सम्बन्धित है–

**कठपुतली–1**

| | |
|---|---|
| गन्त्री गच्छति | गाड़ी जाती है। |
| सीता गच्छति | सीता जाती है। |
| त्वम् गच्छसि | तुम जाते हो। |
| अहं पठाामि | मैं पढ़ती हूँ। |
| अहं लिखामि | मैं लिखती हूँ। |

**कठपुतली–2** अरे दीदी यह क्या गा रही हो?

गच्छति, पठति, अहम्, त्वम–हा–

**कठपुतली–1** अरे राजू मैं तो कविता गा रही हूँ।

कविता के माध्यम से पुरूष के प्रकार याद कर रही हूँ।

**कठपुतली–2** पुरूष– मैं तो लड़का हूँ– हा– हा–

**कठपुतली–1** अरे वो पुरूष नहीं मैं संस्कृत में अनुवाद करने में पुरूष ज्ञान बहुत जरूरी होता है। चलो मैं पुरूष के प्रकार समझाती हूँ।

''मैं हूँ पुरूष, मैं बड़ा उपयोगी।
बच्चों जब अनुवाद करोगे।

तब मेरा उपयोग करोगे।

मैं हूँ पुरूष, मैं बड़ा उपयोगी।

हा हा हा .....''

बच्चों मैं पुरूष हूँ। जब आप संस्कृत का अनुवाद करते हो, तो मेरा ज्ञान बहुत जरूरी होता है। मैं आपको अपना पूरा परिचय विस्तार से बताता हूँ। चलो मैं अपने तीनों रूपों से मिलवाता हूँ।

**उत्तम पुरूष :–** बच्चों ! मैं हूँ उत्तम पुरूष। जहाँ पर मैं, हम दोनो, हम सब होते हैं वहाँ मैं ही रहता हूँ। अर्थात् उत्तम पुरुष। इसके अलावा मैं कहीं नहीं मिलता।

**मध्यम पुरुष :–** बच्चों ! मैं हूँ मध्यम, जहाँ पर तुम, तुम दोनो और तुम सब होते है, वहाँ मैं पाया जाता हूँ अर्थात मध्यम पुरुष। इन तीनों के अलावा मैं कहीं नहीं रहता।

**प्रथम पुरुषः–** हा, हा, हा मैं हूँ प्रथम, मैं हूँ प्रथम। मैं, हम दोनो, हम सब, तुम, तुम दोनो तुम सब इन छहों को छोड़कर दुनिया में मैं हर जगह रहता हूँ।

'' मैं उत्तम, 'तुम' मध्यम, अन्य सकल संसार ''

तो समझे बच्चों –

(3) चलो हम सब गीत गाते हैं ––

मै, हम दोनो, हम सब, उत्तम पुरूष हैं।

अहम, आवाम्, वयम, इनकी संस्कृत है।।

तुम, तुम दोनो, तुम सब मध्यम पुरूष है।

त्वम्, यूवाम, यूयम इनकी संस्कृत है।।

इन छहों को छोड़कर सब प्रथम पुरुष हैं।

जैसे, राम, वह, सीता, गीता आदि सभी हैं।।

इसके बाद बच्चों ने कितना सीखा, इसका आकलन– टी.एल.एम., फ्लैश कार्ड द्वारा त्वम्, यूवाम, वयम, आवाम, अहम, यूयम, सः, वृक्षः, आदि को मेज पर बिखेर देगें और बच्चों से पूँछेगें– मध्यम पुरूष एकवचन, कहाँ है, प्रथम पुरूष लाओ, तो बच्चे आसानी से ढूँढकर बता पायेगें। कठपुतली के माध्यम से पढ़ाकर किसी भी विषय को रूचिकर बनाया जा सकता है। इस प्रकार न केवल संस्कृत को बच्चों के लिए रूचिकर और सरल बनाया जाता है बल्कि प्राथमिक स्तर पर जब अन्य

विषयों जैसे– भूगोल, विज्ञान, इतिहास व गणित के कतिपय टॉपिक्स को भी कठपुतली प्रदर्शन द्वारा पढ़ाया जाता है तो बच्चों की कक्षा में उपस्थिति और उनके अधिगम स्तर पर भी विशेष प्रभाव पड़ता है।

**प्रभाव–** संस्कृत की कक्षा में बच्चों को नियमित रूप से कठपुतली का चरित्र बदलते हुए पढ़ाने से बच्चों को अनुवाद करने मे आसानी हो रही है और उनमें संस्कृत भाषा पढ़ने के प्रति उत्साह का विकास हो रहा है। इसके साथ ही बच्चों को खेल व मनोरंजन के माध्यम से पढ़ाने से उनके अन्दर विभिन्न भाषाओं को जानने और सीखने की जिज्ञासा बढ़ रही है। बच्चे खेल–खेल में संस्कृत पढ़कर सीख रहे हैं और कठपुतली के माध्यम से अपनी प्राचीन कला और संस्कृति से भी परिचित हो रहे हैं।